letter2:letter1.qxd 9/26/2010 8:42 PM Page 110

समाज ही शासन की मूलभूत शक्ति है। समाज सह-अस्तित्व से प्रेरित और सुसंगठित न रहा तो शासन सुशासन कदापि नहीं बन सकता। यह तथ्य नजर से ओझल हुआ तो लोकतंत्र की सफलता असंभव है।

भारत स्वतंत्र हुआ। सन् 1952 में स्वीकृत संविधान के अनुसार चुनाव हुए। सवस्वतंत्र भारत की पहली सरकार बनी। इस सरकार का प्राथमिक दायित्व था - स्वतंत्रता को स्वाधीनता में परिणत करना। यह स्वाधीनता जनप्रतिनिधियों द्वारा गठित मंत्रिमंडल तक ही सीमित रहनी नहीं चाहिए थी। अपितु देश की प्रत्येक आबादी स्वाधीन बनाने की दिशा में गतिशील होनी चाहिए थी। तभी हम अपने देश में लोकतंत्र का शुभारंभ मान सकते थे।

जब तक देश के छः लाख गांव स्वावलंबी और स्वाभिमानी नहीं बनते, तब तक स्वतंत्रता तथा स्वाधीनता का कोई अर्थ नहीं होता। स्वतंत्रता के 57 वर्ष बीतने के बाद भी न देश के गांव स्वाधीन बन पाए हैं, न देश ही सर्वथा स्वाधीन हो पाया है। इस दुरावस्था के कारण देश का कोई नेता चिंतित होता हुआ दिखाई नहीं देता।

नेता कहलाने वाले महानुभाव प्रभावी वक्ता हो सकते हैं। तर्कयुक्त बहस करने में भी निपुण बन सकते हैं। संसद में बहस करने में निष्णात सिद्ध होकर पुरस्कार भी पा सकते हैं। किन्तु क्या उनकी ये योग्यताएं भारत के दुर्दशाग्रस्त गांवों को स्वावलंबी बनाने में काम आ रही हैं?

अपने देश की राजधानी नई दिल्ली मानव जीवन की सभी सुविधाओं से सम्पन्न नगरी है। चौड़ी-चौड़ी और साफ-सुथरी सड़कों का जाल नगरभर में फैला है। परिवहन की सुविधा के लिए अनेक फ्लाईओवर बने हैं और बनते जा रहे हैं। अब तो आधुनिक मैट्रो रेल नागरिकों के आकर्षण का केन्द्र बनी है।

ऊंची-ऊंची अट्टालिकाएं दिल्ली की शान बढ़ा रही हैं। जगह-जगह हरे-भरे लॉन और रंग-विरंगे फूलों के उद्यान दिल्ली को मनोहारी बना रहे हैं। दुनिया के विकसित राष्ट्रों की राजधानियों से हमारे देश की राजधानी खूबसूरती में प्रतिस्पर्धा कर रही है।

किन्तु प्रश्न उपस्थित होता है कि मंदिर का निर्माण कलश से प्रारंभ होता है या नींव से? भारत के छः लाख गांव देश की नींव के प्रतीक हैं। गत 57 वर्ष की स्वतंत्रता के बाद भी इन गांवों की दशा दयनीय बनी हुई है। यदि हमारे गांवों की यही दशा बनी रही तो कलश रूपी राजधानी नई दिल्ली का भविष्य क्या होगा? ग्रामीण अंचल के निवासी अन्नदाता कहे जाने वाले किसान भुखमरी के शिकार बन रहे हैं। अभाव की असह्य पीड़ा के कारण वे आत्महत्या कर लेने के लिए विवश हैं। देश के करोड़ों बेकारों व गरीबों की मानसिकता पर उपर्युक्त दयनीय दशा का क्या असर हो रहा है? देश में निरंतर बढ़ रही लूट-खसोट, खून-खराबा और डकैतियां किस ओर इशारा कर रही हैं?

स्वतंत्रता पाकर सातों तक उपेक्षा सहकर और अब अराजकता की मार के कारण देश के नागरिक भविष्य-निर्माण के लिए नौजवानों की ओर आशाभरी नजरों से देख रहे हैं। भारत की नई पीढ़ी देश के सामान्यजनों को निराश होने नहीं देगी, इस विश्वास में -

शुभाकांक्षी

नाना देशमुख

(नाना देशमुख)

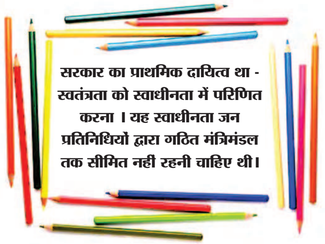

सरकार का प्राथमिक दायित्व था - स्वतंत्रता को स्वाधीनता में परिणित करना । यह स्वाधीनता जन प्रतिनिधियों द्वारा गठित मंत्रिमंडल तक सीमित नहीं रहनी चाहिए थी।

प्रिय युवा बंधुओं और बहनों, 21 जून, 2005

चारों ओर स्वार्थसिद्धि के गहराते वातावरण में भी हमें निराश होने की आवश्यकता नहीं है। देश की हतोत्साहित इस अवस्था में भी हमारे वैज्ञानिक स्वप्रेरणा से, उपलब्ध साधनों के सहारे, राष्ट्रीय सुरक्षा को सबल बनाने में जुटे हैं। वे ऐसी खोज करने में सफल सिद्ध हुए हैं, जिससे देश की सुरक्षा अधिक सुदृढ़ हुई है।

हमारी सेना ने उपर्युक्त वातावरण में भी देश पर हुए आक्रमणों में अदम्य साहस, अडिग आत्मविश्वास, अद्वितीय पराक्रम एवं अनोखे रणकौशल से शत्रुओं को परास्त कर अपनी विजय पताका फहराई है। कारगिल में अचानक और महाघातक आक्रमण को जिस धैर्य, साहस, पराक्रम और रणकौशल से परास्त किया, वह शौर्य का बेजोड़ नमूना है। सन् 1962 में चीन का आक्रमण हुआ था, उसमें हमारी सेना की विफलता नहीं, देश के नेतृत्व की गफलत हमें धोखा दे गई। बांग्लादेश की आजादी के संघर्ष में शत्रु के 93,000 सैनिकों को बंदी बनाना, हमारी सेना का अद्भुत करिश्मा था।

किन्तु स्वतंत्र होने के बावजूद हमने कुटिल अंग्रेजों के पिछलग्गू बन तत्वदर्शी भारत को उपभोगवाद का शिकार बना दिया। ''कौन बनेगा करोड़पति'' का लक्ष्य देश की नई पीढ़ी के सामने रखा। उन्हें मानवीयता से वंचित किया। देशभक्ति की भावना जीवन से मिटा दी गई।

परिणामस्वरूप, देश की स्थल-सेना, नौ-सेना तथा वायु-सेना में लगभग 14,000 युवा अफसरों के स्थान रिक्त पड़े हैं। अनेक आकर्षण प्रस्तुत करने के बाद भी तीन-चार पीढ़ियों से सेना में योजदान देने वाले परिवारों के नवयुवक भी अब सेना में सरीक होना नहीं चाहते। वे अधिकतम धन पाने के पीछे पड़े हैं। यही स्थिति वैज्ञानिक क्षेत्र की भी बनी है। देशभक्ति की प्रेरणा प्रदान करने वाला व्यक्तित्व खो, जले पर भी मिलना मुश्किल हो गया है।

यदि युवा-पीढ़ी ने इस धनलोलुप-वृत्ति की दासता का निवारण करने की दिशा में कदम नहीं बढ़ाया तो देश का भविष्य बनना कैसे संभव होगा? लाभप्रद पदों के मोहजाल के वशीभूत नेतागण अपनी-अपनी पार्टी में नयी गुटबाजी घटा नहीं सकते, वे नई पीढ़ी में देशभक्ति की उमंग कैसे जगा पाएंगे?

प्रचलित राजनीति देश को गुमराह कर रही है। उसके पचड़े में पड़ना उचित नहीं है। राजनीति को ठीक राह पर लाने का काम समाज का है। कारण, समाज ही राष्ट्र की मूलभूत शक्ति है। समाज के द्वारा सरकारों का निर्माण होता है। सरकारें, समाज नहीं बनाया करतीं। देश के वर्तमान नेताओं ने इस तथ्य को विस्मृत कर रखा है।

पचास साल बाद देश का शिखर नेतृत्व अब अनुभव करने लगा है कि प्रशिक्षित अफसरों का मार्गदर्शन अप्रशिक्षित नेता नहीं कर सकते। अतः नेताओं का प्रशिक्षण आवश्यक है। इस मामूली बात को समझने के लिए उन्हें पचास साल लग गए।

वस्तुतः स्वतंत्र भारत के नेतागण अंधी-गली में पहुंच गए हैं। उन्हें देश के भविष्य का मार्ग सूझ नहीं रहा है।

संसार के विकसित कहे जाने वाले देशों का दिखाई देने वाला विकास टिकाऊ नहीं है। शहरों में केन्द्रित उनकी अर्थव्यवस्था उनके लिए मुसीबत बन रही है। प्राकृतिक संसाधनों की खदान ग्रामीण अंचल में काम करने के लिए उन्हें अब लोगों का मिलना असंभव हो रहा है।

प्रगति की उपर्युक्त गलत दिशा बदलने के लिए

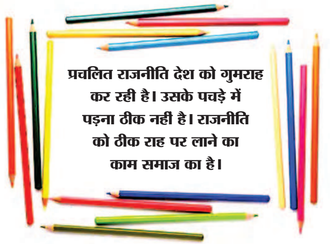

प्रचलित राजनीति देश को गुमराह कर रही है। उसके पचड़े में पड़ना ठीक नहीं है। राजनीति को ठीक राह पर लाने का काम समाज का है।